

## खास महल (आरामगाह) और अंगूरी बाग (1631-40)

यह बादशाह का निजी महल है जो बड़े मनोरम रूप से हरम (रनिवास) परिसर में स्थित है, जिसमें खुली छतें, पर्दे, तालाब, फव्वारे और झरना, एक सुन्दर अन्दरूनी बाग और आवास-गृह, ढालान और आँगन व्यवस्थित रूप से बने हैं। इसे शाहजहाँ ने अकबर के लाल पत्थर के महल के स्थान पर बनवाया था। उसके इतिहासकार लाहौरी ने इसे 'आरामगाह' (बादशाह का विश्राम-कक्ष) नाम दिया है। यह महल क्रम से तीन उतरते हुए तलों बना है, पहले नदी की ओर मुख्य महल है फिर विस्तीर्ण खुली छतें हैं और फिर बाग है। इस प्रकार यह महल एक मनोरम स्थिति में शाही अन्दरूनी में खड़ा हुआ है। यह दृष्टव्य है कि शाहजहाँ का स्थपति इस सुन्दर योजना-विन्यास का विशेषज्ञ था। मुख्य महल के मध्य में एक बड़ा हॉल है जिसके दोनों ओर शाहनशी और कमरे हैं और आगे एक बड़ा ढालान है। इसके सामने बाग है। यह महल पूर्णरूपेण श्वेत संगमरमर का बना है जिस पर दीप्तिमय चित्रकारी और सुनहरी काम किया गया था। इजारों के ऊपर दीवारों में आलय बने हैं जिनमें चित्र लगे थे। ढालान की संरचना में दाँतेदार महराबों का प्रयोग हुआ है जो चतुरस्र भित्तिस्तम्भों पर टिकाये गये हैं। इसके सामने अलंकृत हाशियेदार एक सुन्दर कुण्ड है। इसमें फव्वारे लगे हैं जिनमें छत पर बने तालाबों से पानी आता था। इसका पानी बहकर एक उथली नहर में होकर झरने के रूप में गिरता था, जिसके पीछे, शैली के अनुसार एक चीनी-खाना बना है जिसमें आलय की शृंखलाएँ हैं। इन जल-साधनों से महल में एक अत्यन्त मनमोहक वातावरण बन जाता था। मुख्य महल के दोनों ओर लम्बाकार भवन हैं जिसमें छज्जे और छतें वृत्ताकार अर्थात् 'बांगलादार' हैं। लाहौरी ने इनको 'बांगला' कहा है। उसने लिखा है कि "शाहजहाँ 'शाह-बुज' के अतिरिक्त, उत्तरी बांगले का भी झरोखा दर्शन हेतु उपयोग करता था"। ये दोनों भवन लाल पत्थर के बने हैं और पूर्णतया श्वेत चूने से ढके हैं जिस पर पॉलिश की गयी है। यह श्वेत संगमरमर सा लगता है। उत्तरी बांगले में तोड़े और उत्तरंगों का प्रयोग हुआ है जबकि दक्षिणी बांगले में दाँतेदार महराब हैं। उत्तरी बांगला शाहजहाँ से पहले का है और बहुत संभव है कि यह अकबर के उस मूल महल का बचा

हुआ भाग है, जिसे शाहजहाँ ने श्वेत संगमरमर से पुननिर्मित करा दिया था। इन भवनों को काल्पनिक रूप से 'जहाँनारा और रोशनारा' कहा जाता है जो मिथ्या है। एक असाधारण बात यह है कि इसमें मुख्य महल को इस बंगले से अलग करने के लिए श्वेत संगमरमर के पर्दे (सरापर्द) बनाए गये हैं। ये लम्बरूप भागों में बंटे हैं और प्रत्येक में तीन दाँतदार महराब उत्कीर्ण हैं, अन्यथा ये पर्दे बिल्कुल सादा हैं। ऐसे पर्दे दिल्ली के लालकिले में शाहजहाँ के महलों में भी नहीं हैं। अंगूरी बाग एक सुन्दर अन्दरूनी बाग है जो बड़े सुहावने ढंग से इस महल के सामने लगाया गया है। यह श्वेत संगमरमर की उठी हुई वीथिकाओं द्वारा चार भागों में बंटा है अर्थात् चारबाग है। प्रत्येक भाग में ज्यामितिक रूप से क्यारियाँ बनाई गयी हैं। इसके तीन तरफ दुमंजिले आवासगृह बने हैं। ये भी लाल पत्थर के हैं किन्तु बाहर से पूर्णतया श्वेत चूने से ढके हैं। यह महल 'बंगाली महल' और 'मच्छी भवन' के मध्य में सुरक्षित रूप से स्थित है, चारों ओर से बन्द है और पर्दे में है, तथापि पूर्णरूपेण खुला हुआ और हवादार है और इसमें एक विस्तीर्ण बाग भी है—इस प्रकार यह महल एक आदर्श मध्यकालीन हरम-परिसर है।



## THE KHAS-MAHAL (ARAMGAH) & ANGURI-BAGH (1631-40 A.D.)

This is the King's own palace, splendidly set in the *Haram* complex, consisting of open terraces; curtains; tanks; fountains and a water-fall, a beautiful indoor garden; and living apartments, dalans and courts – all around it. It was built by Shahjehan in place of Akbar's redstone palace. His Historian Lahauri was called it '*Aramgah*' (The King's Bed-Chamber). It is laid out in three receding levels, viz. the main palace overlooking the river; spacious open terraces; and the garden respectively, enabling it to stand majestically in a charming setting, which was a specialization of Shahjehanian Architect. The main palace consists of a central hall, with *Shah-Nashin* (Alcoves) and rooms on the sides, and a large dalan on its front, facing the garden. It is entirely built of white marble which was gorgeously painted and gilded niches above the dados contained portraits. *Dalan* is made up of cusped arches which are supported on square piers. A beautiful tank with scalloped border is there in its front. Its fountains were fed by overhead tanks. Water rippled through a shallow canal to a water-fall, behind which, true to the style, a *Chini-Khanah* (series of candle-niches) is provided. These water devices created an enchanting atmosphere in the palace. On either side of the main palace is an oblong pavilion with 'Bangladar curved chhajja and roof'. Lahauri mentioned them as 'Bungla'. He noted that northern one was used by Shahjehan for *Jharokha-Darshan* (in addition to the Shah-Burj). These pavilions are built of redstone, and are fully white stuccoed and polished like white marble. The northern bungla has brackets-and lintel openings, while the southern one has cusped arches. The former is Pre-Shahjehanian and,

most probably, it is a relic of the original palace of Akbar which was otherwise rebuilt with white marble by Shahjehan. These pavilions are fancifully, though wrongly called '*Jahanara*' and '*Roshanara*'. An unusual feature, which is not there even in Shahjehan's palaces of Red Fort, Delhi, is the white marble curtain (*Saraparda*) used for separating the main palace from these bungalows. These are divided into vertical sections, each one bearing a trefoil arch. Otherwise these are quite plain, at present *Anguri Bagh* is a beautiful indoor garden, charmfully laid out in front of the main palace. It is divided into four quarters (*Char-bagh*) by white marble raised causeways. Each quarter having geometrically drawn parterres. On its three other sides are double-storeyed living apartments which are of redstone, all exteriorly white-stuccoed. Securely set between the *Bengali-Mahal* and *Machchhi-Bhawan*, closed and in *purdah* still fully open and airy with a spacious garden. This palace was an ideal medieval *Harem* complex.

